Drishti IAS

करेंट अफेयर्स उत्तराखंड

अगस्त (संग्रह)

2024

Drishti, 641, First Floor, Dr. Mukharjee Nagar, Delhi-110009
Inquiry (English): 8010440440, Inquiry (Hindi): 8750187501
Email: help@groupdrishti.in

अनुक्रम

उत्तराखंड **3**

- केदारनाथ में भीषण आपदा 3
- उत्तराखंड के लिये रेड अलर्ट 3
- उत्तराखंड 3
- दुर्लभ आर्किड प्रजातियाँ 4
- उत्तराखंड में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव 5
- उत्तराखंड स्थापना दिवस से पहले UCC 5
- NGT द्वारा उत्तराखंड को वहन क्षमता की ज़िम्मेदारी का खुलासा करने का आदेश 7
- राज्य शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार 8
- उत्तराखंड में भूमि अवतलन 8
- निराश्रित गोवंशीय पशुओं को गोद लेने के लिये मानदेय 9
- उत्तराखंड की नदियों में बहीं महिलाएँ 9
- कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व के नज़दीक आवारा कुत्तों का टीकाकरण 10
- विश्व हाथी दिवस 11
- उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने 30 करोड़ रुपए की योजनाओं का शुभारंभ किया 13
- उत्तराखंड ने चार धाम पर्यटकों पर प्रतिबंध हटाया 14
- सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक 15
- सरकारी नौकरियों में आंदोलनकारियों को आरक्षण 15
- उत्तराखंड विधानसभा में अनुपूरक बजट पेश किया गया 16
- NCGG मसूरी में क्षमता निर्माण कार्यक्रम 16
- ओम पर्वत से पहली बार बर्फ लुप्त 17

नोट :

उत्तराखंड

केदारनाथ में भीषण आपदा

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **केदारनाथ** में **बादल फटने** से व्यापक क्षति हुई, जिससे **सोनप्रयाग में मंदाकिनी नदी का जलस्तर तेज़ी से बढ़ गया।**

- ऐसी परिस्थिति में आपातकालीन सेवाओं को हाई अलर्ट जारी किया गया है क्योंकि अधिकारियों को **केदारनाथ में 150 से 200 तीर्थयात्री फँसे होने की आशंका** है।

मुख्य बिंदु

- बादल फटने से **केदारनाथ पैदल मार्ग भूस्खलित हुआ**, जिससे मार्ग का लगभग 30 मीटर हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया, जिसके कारण लोगों की सुरक्षा के चलते इसे अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया।
  - **हरिद्वार में** भीषण वर्षा के कारण क्षेत्र में **बाढ़** की स्थिति उत्पन्न हुई। भूपतवाला, हरिद्वार, नया हरिद्वार, कनखल और ज्वालापुर जैसे इलाके इससे गंभीर रूप से प्रभावित हुए।
- **क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र** ने उत्तराखंड के **सात ज़िलों में अत्यधिक भीषण वर्षा के लिये रेड अलर्ट जारी किया।**

मंदाकिनी नदी

- यह उत्तराखंड में **अलकनंदा नदी** की एक सहायक नदी है।
- यह नदी **रुद्रप्रयाग** और **सोनप्रयाग** क्षेत्रों में लगभग 81 किलोमीटर तक विस्तृत है तथा **चोराबाड़ी हिमनद** से निकलती है।
- मंदाकिनी सोनप्रयाग में सोनगंगा नदी में मिल जाती है और **उखीमठ में मध्यमहेश्वर मंदिर के पास** से बहती है।
- अपने मार्ग के अंत में यह अलकनंदा में गिरती है, जो **गंगा** में मिल जाती है।

उत्तराखंड के लिये रेड अलर्ट

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)** ने **अत्यधिक भारी वर्षा और संभावित बाढ़ के बढ़ते खतरे** के कारण **हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड** के कुछ क्षेत्रों के लिये **रेड अलर्ट** जारी किया है।

मुख्य बिंदु

- भारी बारिश के कारण **जलभराव, भूस्खलन और दैनिक जीवन तथा परिवहन में व्यवधान की चिंता बढ़ गई है।**
- अधिकारी इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से आग्रह कर रहे हैं कि वे **मौसम के नवीनतम अपडेट से अवगत रहें** और मानसून के तेज़ होने के साथ ही अपने स्वास्थ्य एवं संपत्ति की सुरक्षा के लिये **आवश्यक सावधानी बरतें।**

कलर-कोडेड मौसम चेतावनी

- यह IMD द्वारा जारी किया जाता है जिसका उद्देश्य गंभीर या खतरनाक मौसम से पहले लोगों को सचेत करना है जिससे नुकसान, व्यापक व्यवधान या जीवन को खतरा होने की संभावना होती है।
- चेतावनियाँ प्रतिदिन अपडेट की जाती हैं।

नोट :

- **IMD 4 रंग कोड का उपयोग करता है:**
  - **हरा (सब ठीक है): कोई सलाह जारी** नहीं की गई है।
  - **पीला (सावधान रहें):** पीला रंग कई दिनों तक चलने वाले खराब मौसम को दर्शाता है। यह भी बताता है कि मौसम और भी खराब हो सकता है, जिससे दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में व्यवधान आ सकता है।
  - **नारंगी/अंबर (तैयार रहें):** नारंगी अलर्ट **अत्यंत खराब** मौसम की चेतावनी के रूप में जारी किया जाता है, जिससे सड़क और रेल मार्ग बंद होने से आवागमन में व्यवधान उत्पन्न होने तथा विद्युत आपूर्ति बाधित होने की संभावना रहती है।
  - **लाल (कार्रवाई करें):** जब अत्यंत खराब मौसम की स्थिति निश्चित रूप से **यात्रा** और विद्युत **बाधित** करने वाली हो तथा जीवन के लिये महत्त्वपूर्ण खतरा उत्पन्न करने वाली हो, तो रेड अलर्ट जारी किया जाता है।
- ये चेतावनियाँ **सार्वभौमिक प्रकृति** की होती हैं तथा बाढ़ के दौरान भी जारी की जाती हैं, जो अत्यधिक वर्षा के परिणामस्वरूप भूमि/नदी में जल की मात्रा पर निर्भर करती हैं।
- उदाहरण के लिये, जब किसी नदी का जल 'सामान्य' स्तर से ऊपर या 'चेतावनी' और 'खतरे' के स्तर के बीच होता है, तो यलो अलर्ट जारी किया जाता है।

दुर्लभ आर्किड प्रजातियाँ

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड वन विभाग** के दो **अनुसंधान सहयोगियों ने पिथौरागढ़ ज़िले** के मुनस्यारी तहसील के गिनी बैंड में एक **दुर्लभ आर्किड प्रजाति**, ***कैलेंथे डेविडी,*** पाई ।

मुख्य बिंदु

- **भारत में आर्किड की 244 प्रजातियाँ पाई जाती हैं** तथा **उत्तराखंड में इनमें से 120 प्रजातियाँ** पाई जाती हैं, जिनमें से कुछ अत्यंत दुर्लभ हैं।
  - ऐसी ही एक दुर्लभ प्रजाति है कैलन्थे डेविडी, **जो एक स्थलीय पौधा है जो गुच्छों में उगता है और 40 से 90 सेंटीमीटर** तक की ऊँचाई तक पहुँचता है।

नोट :

- इस प्रजाति की **खोज सबसे पहले पश्चिमी हिमालय में की गई थी,** जिसमें उत्तराखंड में मसूरी और मायाबस्ती, हिमाचल प्रदेश में चंबा, जम्मू-कश्मीर तथा अरुणाचल प्रदेश शामिल हैं।
- **उत्तराखंड में यह पहली बार वर्ष 1898 में मसूरी में** और **वर्ष 2002 में चंपावत में पाया गया था।**
- **मौसमी बकरी चराने** की गतिविधियों **के कारण** यह प्रजाति **खतरे में है।**

- इसके जवाब में **उत्तराखंड वन अनुसंधान विंग** ने इस प्रजाति के संरक्षण के लिये **चमोली ज़िले में स्थित एक नर्सरी में पौधों की खेती के प्रयास शुरू किये हैं।**

उत्तराखंड में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

चर्चा में क्यों ?

विशेषज्ञों के अनुसार, **उत्तराखंड में** हुई **भारी वर्षा बादल फटने के कारण नहीं** हुई, बल्कि यह **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव** को दर्शाती है, जो **भारतीय हिमालय** की ऐसी **तीव्र वर्षा के लिये तैयारियों की कमी को उजागर करती है।**

मुख्य बिंदु

- रुद्रप्रयाग, देहरादून, पौड़ी और टिहरी गढ़वाल ज़िलों में भारी वर्षा के कारण जान-माल के नुकसान की खबर है।
- **भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)** के मौसम विज्ञानी के अनुसार, **'बादल फटना' एक घंटे में 100 मिमी. से अधिक वर्षा को कहा जाता है।**
  - इस मामले में केदारनाथ में बादल नहीं फटा, लेकिन नैनीताल और देहरादून में एक घंटे में 50 मिमी. से अधिक तथा सोनप्रयाग में एक घंटे में 30 मिमी. से अधिक बारिश दर्ज की गई।
- उच्च पर्वतीय क्षेत्रों की **संवेदनशील भू-आकृति** विज्ञान संबंधी स्थितियों के कारण **कम वर्षा भी अधिक नुकसान** पहुँचाती है।
  - **भूस्खलन** तीव्र ढलान, भूमि के आकार और मृदा की प्रकृति के कारण होता है, जिससे व्यापक क्षति होती है।
- **भूगर्भीय दृष्टि से युवा हिमालय पर्वतमाला भारी वर्षा के लिये नहीं बनी है** तथा **जलवायु परिवर्तन के कारण** पर्वतों में **गर्मी एवं वर्षा दोनों की तीव्रता बढ़ रही है।**

भूस्खलन

- भूस्खलन को **चट्टान, मलबे या मृदा के द्रव्यमान का ढलान से नीचे खिसकना** कहा जाता है।
- यह **एक प्रकार का सामूहिक क्षय (Mass Wasting)** है, जो गुरुत्वाकर्षण के प्रत्यक्ष प्रभाव के तहत मृदा और चट्टान के नीचे की ओर होने वाले किसी भी प्रकार के संचलन को दर्शाता है।
- भूस्खलन शब्द में ढलान संचलन के **पाँच तरीके शामिल हैं: गिरना (Fall), लटकना (Topple), फिसलना (Slide), फैलाव (Spread) और प्रवाह (Flow)।**

उत्तराखंड स्थापना दिवस से पहले UCC

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड के मुख्यमंत्री** ने घोषणा की कि उनका राज्य **स्थापना दिवस (9 नवंबर, 2024)** से पहले **समान नागरिक संहिता (UCC) लागू करेगा।**

मुख्य बिंदु

- **UCC विधेयक 6 फरवरी, 2024 को राज्य विधानसभा में पेश किया गया था और 7 फरवरी, 2024 को उत्तराखंड विधानसभा के विशेष सत्र** के दौरान **पारित किया गया था।**

नोट :

- भारत में **विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और संपत्ति के अधिकार जैसे व्यक्तिगत मामलों के लिये समान नियम स्थापित करने** का प्रस्ताव किया गया था, जो सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू होते हैं, चाहे उनका **धर्म, लिंग या यौन अभिविन्यास कुछ भी हो।**
- प्रस्तावित कानून में **392 धाराएँ हैं, जिन्हें चार भागों और सात अध्यायों में विभाजित किया गया है,** जो महिलाओं को विवाह, तलाक, गुजारा भत्ता तथा संपत्ति के उत्तराधिकार में समान अधिकार प्रदान करते हैं, यह कानून कुछ संबंधों को प्रतिबंधित करता है, बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाता है, पुरुषों एवं महिलाओं के लिये विवाह योग्य आयु (क्रमश: 21 वर्ष और 18 वर्ष) निर्धारित करता है व विवाह का पंजीकरण अनिवार्य बनाता है।
  - **राज्य की अनुसूचित जनजाति की आबादी,** जो कुल **जनसंख्या का 2.89%** है, को इस कानून से छूट दी गई है।

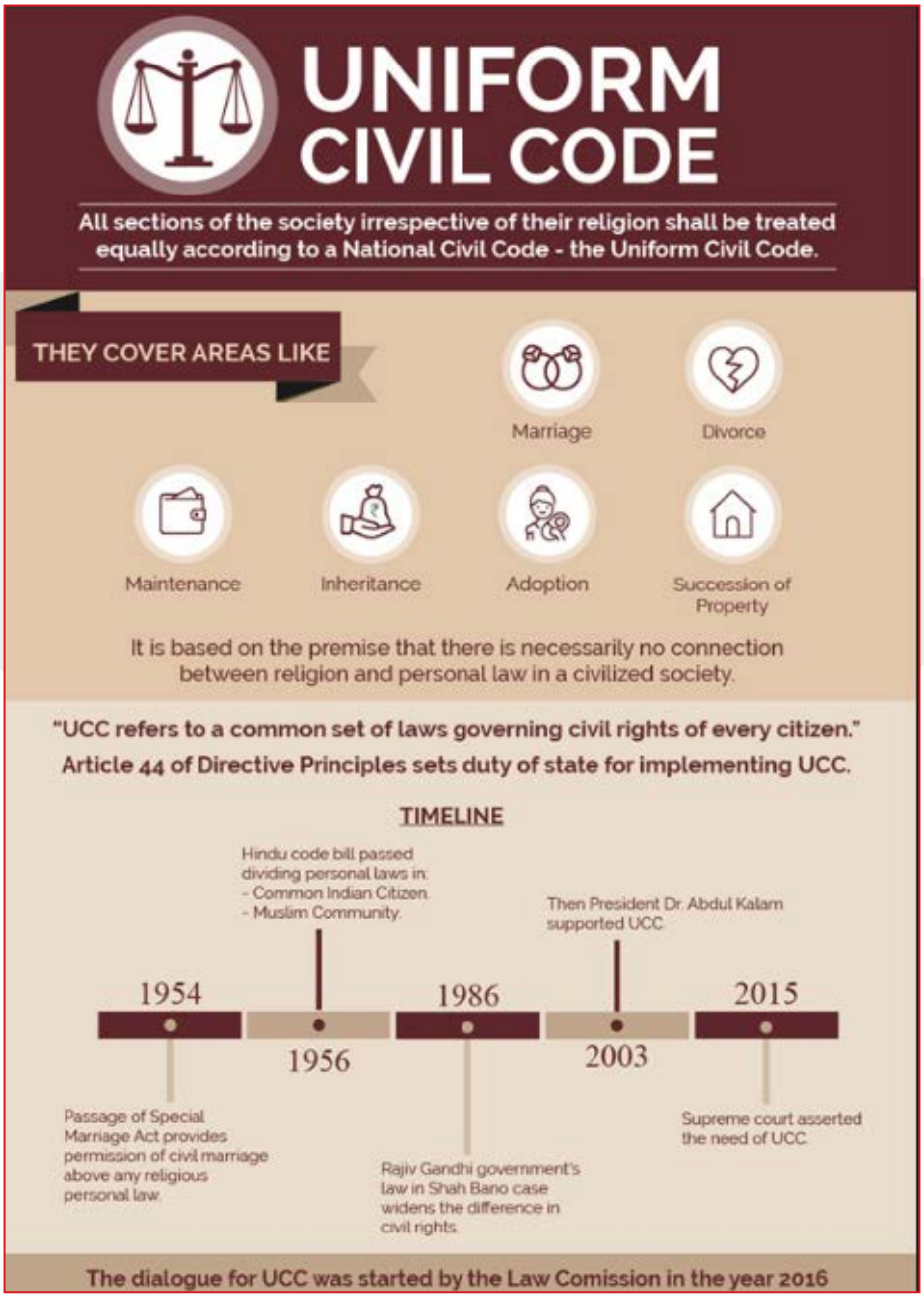

नोट :

NGT द्वारा उत्तराखंड को वहन क्षमता की ज़िम्मेदारी का खुलासा करने का आदेश

चर्चा में क्यों ?

राष्ट्रीय हरित अधिकरण (National Green Tribunal- NGT) ने **उत्तराखंड के पर्यावरण विभाग** से दुर्घटना की स्थिति में **ज़िम्मेदारी का खुलासा** करने को कहा है, क्योंकि उत्तराखंड में **चार धाम** यात्रा के लिये तीर्थयात्रियों की संख्या सीमित करने के लिये कोई वहन क्षमता नहीं है।

मुख्य बिंदु:

- न्यायाधिकरण के अनुसार, **बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री** के मार्गों पर **तीर्थयात्रियों के लिये कोई वहन क्षमता निर्धारित नहीं है** तथा उन मार्गों पर **तीर्थयात्रियों की संख्या के संबंध में कोई प्रतिबंध** नहीं है।
- **राज्य सरकार के वकील** के अनुसार, **चारों तीर्थ स्थलों की वहन क्षमता के बारे में रिपोर्ट प्राप्त करने में एक वर्ष का समय** लगेगा।
- राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) के अनुसार, **तीर्थयात्रियों की अनियंत्रित संख्या के कारण दुर्घटना हो सकती है** और किसी को इसकी ज़िम्मेदारी लेनी होगी।

चार धाम यात्रा

- **यमुनोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी यमुना।
  - गंगा नदी के बाद यमुना नदी भारत की दूसरी सबसे पवित्र नदी है।
- **गंगोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी गंगा।
  - सभी भारतीय नदियों में सबसे पवित्र मानी जाती है।
- **केदारनाथ धाम:**
  - **स्थान:** रुद्रप्रयाग ज़िला।
  - **समर्पित:** भगवान शिव।
  - मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित है।
  - भारत में 12 ज्योतिर्लिंगों (भगवान शिव के दिव्य प्रतिनिधित्व) में से एक।
- **बद्रीनाथ धाम:**
  - **स्थान:** चमोली ज़िला।
  - पवित्र बद्रीनारायण मंदिर का घर।
  - **समर्पित:** भगवान विष्णु।
  - वैष्णवों के पवित्र तीर्थस्थलों में से एक

नोट :

राज्य शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियों के लिये** 13 उत्कृष्ट महिलाओं को देहरादून में **राज्य शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार** से सम्मानित किया।

प्रमुख बिंदु:

- पुरस्कार पाने वालों में अल्मोड़ा की **पैरा-तैराक और एथलीट प्रीति गोस्वामी,** बागेश्वर की **ताइक्वांडो खिलाड़ी नेहा देवली,** हरिद्वार की **पावरलिफ्टर संगीता राणा** तथा उधम सिंह नगर की **पैरा-बैडमिंटन खिलाड़ी मंदीप कौर** शामिल थीं।
- अन्य सम्मानित व्यक्तियों में **लोक गायन के लिये पद्मश्री से सम्मानित माधुरी बर्थवाल, हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिये** चंपावत की **सोनिया आर्य,** जून में जंगली जानवर के हमले से अपनी सास को बचाने के लिये रुद्रप्रयाग की **विनीता देवी, हस्तशिल्प और हथकरघा को आगे बढ़ाने** के लिये चमोली की **नर्मदा रावत** तथा **विज्ञान में योगदान के लिये** नैनीताल की **सुधा पाल** शामिल हैं।

राज्य शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार

- यह पुरस्कार **उत्तराखंड सरकार द्वारा प्रतिवर्ष** वीरबाला तीलू रौतेली के नाम पर **विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं** को दिया जाता है।
  - राज्य सरकार ने **उत्तराखंड की वीरांगना तीलू रौतेली की जयंती पर वर्ष 2006 से महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में** उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं एवं किशोरियों के लिये तीलू रौतेली पुरस्कार की शुरुआत की थी।
- इसके तहत राज्य सरकार **31 हजार रुपए और प्रशस्ति-पत्र** देती है।

उत्तराखंड में भूमि अवतलन

चर्चा में क्यों ?

सूत्रों के अनुसार, **उत्तराखंड मानसून की वर्षा** के कारण बुरी तरह प्रभावित है, जिससे सड़कों और आवासीय भवनों को अत्यधिक नुकसान पहुँचा है।

- मानसून के आगमन के बाद से राज्य में लगातार वर्षा हो रही है, जिसके कारण **मौसम संबंधी चुनौतियाँ** बनी हुई हैं।

मुख्य बिंदु:

- **कुंड-ऊखीमठ-चोपता-गोपेश्वर राजमार्ग** पर कई भूस्खलन हुए हैं, जबकि कुंड में **मंदाकिनी नदी पर बना लोहे का पुल,** जो रुद्रप्रयाग-गौरीकुंड राष्ट्रीय राजमार्ग को केदारघाटी और केदारनाथ से जोड़ता है, नदी की तेज़ धाराओं के कारण **खतरे में है।**
- **राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण प्रभाग** ने पुल निर्माण स्थल का निरीक्षण किया और तत्काल **पुल पर भारी वाहनों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया।**
- उत्तराखंड सरकार ने **प्रभावित क्षेत्रों में हाई अलर्ट जारी कर दिया है** तथा किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिये आपातकालीन सेवाएँ तैयार रखी हैं।

नोट :

- स्थिति पर बारीकी से नज़र रखी जा रही है तथा **निवासियों को अत्यधिक सावधानी बरतने की सलाह दी गई है।**

मंदाकिनी नदी

- यह उत्तराखंड में **अलकनंदा नदी** की एक सहायक नदी है।
- यह नदी **रुद्रप्रयाग** और **सोनप्रयाग** क्षेत्रों के बीच लगभग 81 किलोमीटर तक बहती है तथा **चोराबाड़ी ग्लेशियर** से निकलती है।
- मंदाकिनी नदी सोनप्रयाग में सोनगंगा नदी से मिल जाती है और **उखीमठ में मध्यमहेश्वर मंदिर के पास से प्रवाहित होती है।**
- अपने मार्ग के अंत में यह अलकनंदा में मिल जाती है, जो **गंगा** में मिल जाती है।

निराश्रित गोवंशीय पशुओं को गोद लेने के लिये मानदेय

चर्चा में क्यों ?

सूत्रों के अनुसार, **उत्तराखंड सरकार निराश्रित गोवंशीय पशुओं को गोद लेने वाले राज्यवासियों को एक निश्चित मानदेय देने की योजना** बना रही है।

मुख्य बिंदु:

- अधिकारियों के अनुसार, लोगों को प्रति पशु 80 रुपए दिये जाएंगे तथा विशेष मामलों में यह राशि 100 रुपए तक हो सकती है, यदि पशु अत्यधिक बीमार हो तथा उसे अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता हो।
- **उत्तराखंड पशु कल्याण बोर्ड (Uttarakhand Animal Welfare Board- UAWB)** द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़ों के अनुसार, **राज्य में कुल 60 पंजीकृत गोवंश आश्रय स्थल हैं,** जिनमें वर्तमान में 14,000 गोवंश हैं

नोट: गोवंशीय पशु बोस वंश का एक पालतू, फटे खुर वाला जुगाली करने वाला पशु है, जैसे- **बकरी, गाय, भैंस, बाइसन, हिरण या भेड़**

उत्तराखंड की नदियों में बहीं महिलाएँ

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में उत्तराखंड में **गंगा** और **भागीरथी नदियों** की तेज़ धारा में तीन महिलाएँ बह गईं।

मुख्य बिंदु:

- **राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (State Disaster Response Force- SDRF)** की टीम ने इलाके में तलाशी अभियान शुरू कर दिया है।
- **भागीरथी नदी:**
  - यह उत्तराखंड की एक **अस्थिर हिमालयी नदी** है और गंगा की दो मुख्य धाराओं में से एक है।
  - भागीरथी नदी का उद्गम 3892 मीटर की ऊँचाई पर, **गौमुख** नामक स्थान पर **गंगोत्री ग्लेशियर के तल से होता है** तथा 350 किलोमीटर विस्तृत गंगा डेल्टा में फैलकर अंतत: **बंगाल की खाड़ी** में गिरती है।
  - **भागीरथी और अलकनंदा गढ़वाल में देवप्रयाग में मिलती हैं** तथा उसके बाद **गंगा** के नाम से जानी जाती हैं।

नोट :

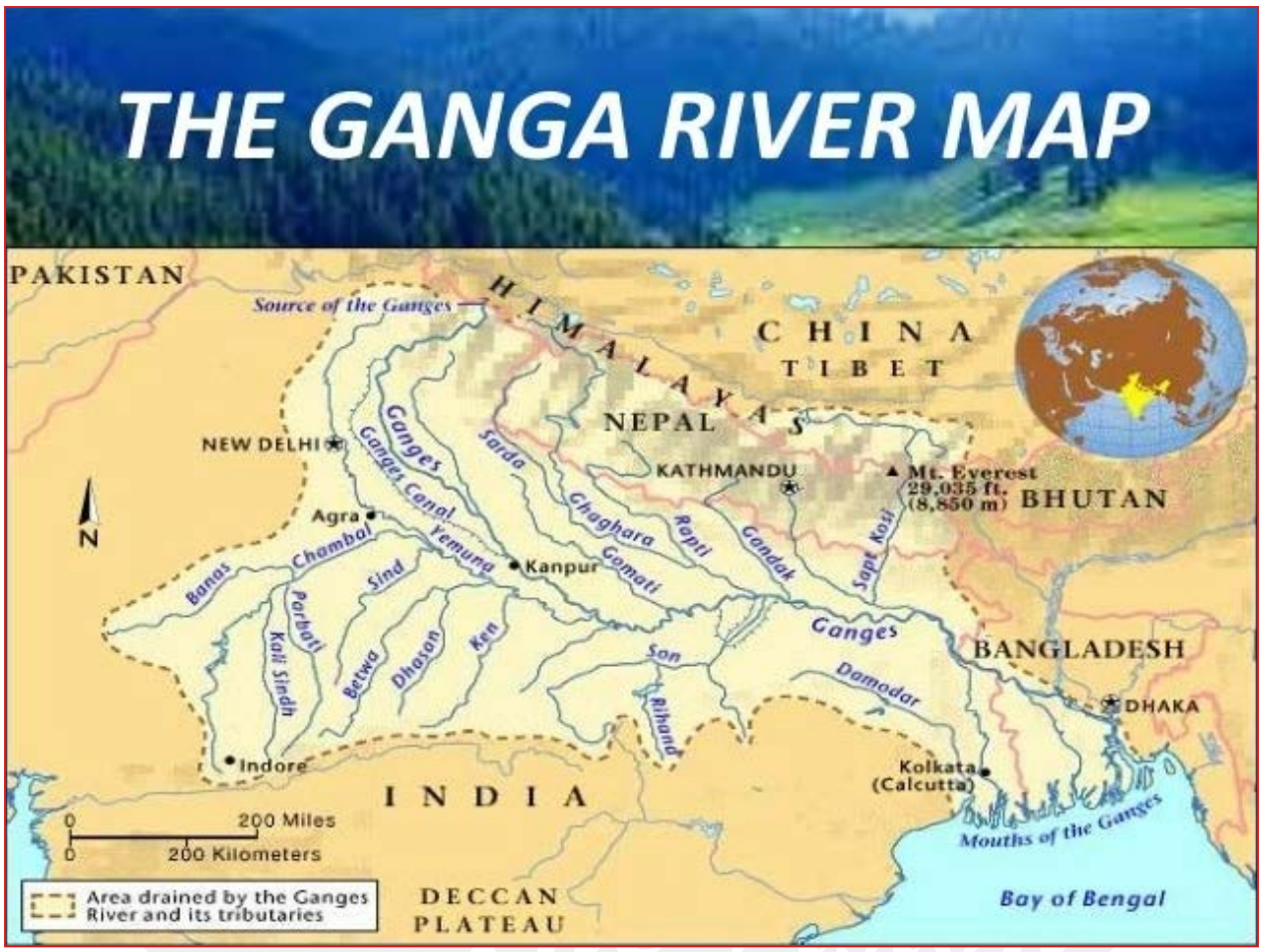

कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व के नज़दीक आवारा कुत्तों का टीकाकरण

चर्चा में क्यों ?

सूत्रों के अनुसार उत्तराखंड में **कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व** की सीमाओं के 2 किलोमीटर के दायरे में आने वाले गाँवों के **आवारा कुत्तों को कैनाइन डिस्टेंपर वायरस** के खिलाफ **टीकाकारण** किया जाएगा, ताकि **यह बीमारी रिज़र्व के बाघों और हाथियों को संक्रमित न कर सके।**

प्रमुख बिंदु:

- कैनाइन डिस्टेंपर वायरस (CDV) मुख्य रूप से कुत्तों में **श्वसन, जठरांत्र, तथा केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के साथ-साथ आँखों में गंभीर संक्रमण का कारण** बनता है।
- यह टीकाकरण अभियान **वन्यजीवों के बेहतर स्वास्थ्य के लिये केंद्र सरकार द्वारा वित्त पोषित पायलट परियोजना के हिस्से के रूप में** चलाया जाएगा।
  - यह भारत सरकार के **राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन** की एक परियोजना है, जिसका उद्देश्य **देश के वन्यजीवों के स्वास्थ्य में सुधार के तरीकों** पर काम करना है।
  - **उत्तराखंड सरकार का पशु चिकित्सा विभाग** और उत्तर प्रदेश के बरेली स्थित **भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (Indian Veterinary Research Institute- IVRI)** संयुक्त रूप से आवारा कुत्तों की जाँच और टीकाकरण करेंगे।

नोट :

कैनाइन डिस्टेंपर वायरस

- कैनाइन डिस्टेंपर वायरस मुख्य रूप से **कुत्तों और जंगली माँसाहारियों** जैसे भेड़ियों, लोमड़ियों, रैकून, लाल पांडा, फेरेट्स, लकड़बग्घे, बाघ और शेरों में **गंभीर संक्रमण को उत्पन्न करने** के लिये जाना जाता है।
- भारत के वन्यजीवों में इस वायरस की व्यापकता और इसकी विविधता का पर्याप्त अध्ययन नहीं किया गया है।
  - शेर एक बार में पूरे शिकार का उपभोग नहीं करते हैं। कुत्ते उस शिकार का उपभोग करते हुए उसे CDV से संक्रमित कर देते हैं। जब शेर अपने शिकार का दुबारा उपभोग करता है तो इस घातक बीमारी की चपेट में आ जाता है।
- CDV **बाघों की तुलना में शेरों के लिये ज़्यादा ख़तरनाक है।** ऐसा इसलिये है क्योंकि शेर समूहों में यात्रा करते हैं, जिससे वे बाघों की तुलना में वायरस के प्रति ज़्यादा संवेदनशील हो जाते हैं, क्योंकि बाघ ज़्यादा एकांतप्रिय और क्षेत्रीय जानवर होते हैं।

विश्व हाथी दिवस

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में उत्तराखंड के **कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व** ने **विश्व हाथी दिवस** मनाने के लिये जागरूकता अभियान चलाया।

प्रमुख बिंदु:

- **कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व:**
  - यह **उत्तराखंड के नैनीताल ज़िले** में स्थित है। **प्रोजेक्ट टाइगर** को वर्ष 1973 में **कॉर्बेट नेशनल पार्क (भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान)** में लॉन्च किया गया था, जो कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व का हिस्सा है।
    - इस राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना वर्ष 1936 में लुप्तप्राय बंगाल बाघ की रक्षा के लिये **हैली नेशनल पार्क** के रूप में की गई थी।
    - इसका नाम जिम कॉर्बेट के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने इसकी स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
  - **कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान** कोर एरिया **बनाता है, जबकि बफर क्षेत्र में आरक्षित वन** तथा सोनानदी वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं।
  - रिज़र्व का पूरा क्षेत्र पर्वतीय है और शिवालिक तथा बाह्य हिमालय भूगर्भीय क्षेत्रों में आता है।
  - **रामगंगा, सोनानदी, मंडल, पलैन और कोसी** रिज़र्व से होकर बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं।
  - **500 वर्ग किलोमीटर** में फैले **कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व** में 230 बाघ हैं और यहाँ प्रति सौ वर्ग किमी० 14 बाघों के साथ विश्व में सबसे अधिक बाघ घनत्व है।
  - **वनस्पति:**
    - यहाँ सघन नम पर्णपाती वन पाए जाते हैं। **भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण** के अनुसार कॉर्बेट में वृक्ष, झाड़ियाँ, फ़र्न, घास, जड़ी-बूटियाँ, बाँस आदि की 600 प्रजातियाँ हैं। कॉर्बेट में पाए जाने वाले सबसे ज़्यादा वृक्ष साल, खैर और शीशम हैं।
  - **जीव-जंतु:**
    - बाघों के अलावा कॉर्बेट में तेंदुए भी हैं। अन्य स्तनधारी जानवर जैसे जंगली बिल्लियाँ, बार्किंग डियर, चित्तीदार हिरण, सांभर हिरण आदि भी यहाँ पाए जाते हैं।
  - **उत्तराखंड के अन्य प्रमुख संरक्षित क्षेत्र:**
    - **नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान।**
    - फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान।

नोट :

- **फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान** और **नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान** संयुक्त रूप से **UNESCO विश्व धरोहर स्थल** हैं।
  - **राजाजी राष्ट्रीय उद्यान**
  - **गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान**
  - गोविंद राष्ट्रीय उद्यान

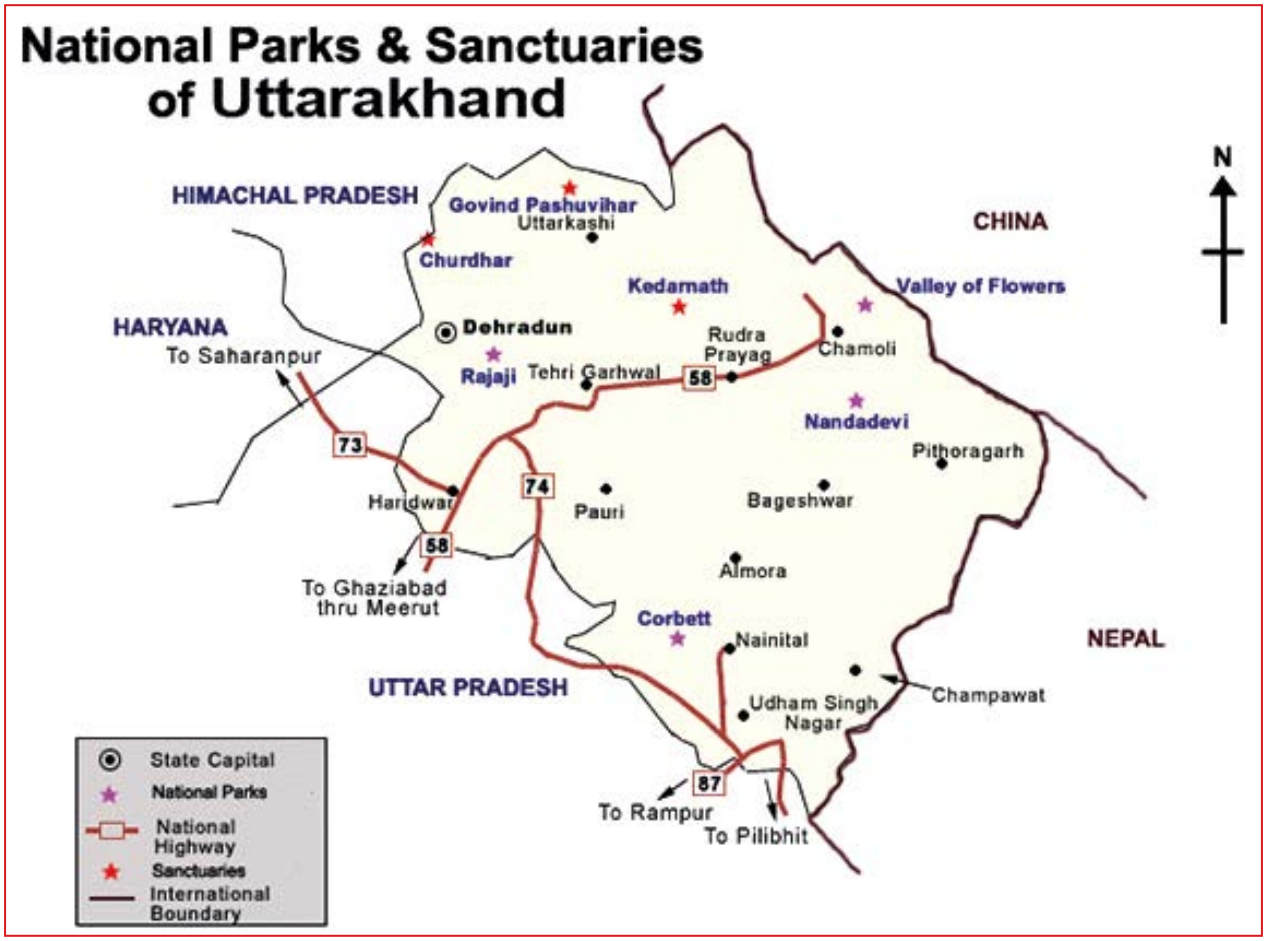

विश्व हाथी दिवस

- यह प्रत्येक वर्ष **12 अगस्त** को वनों में एशियाई और अफ्रीकी हाथियों की स्थिति के संबंध में जागरूकता लाने के लिये मनाया जाता है।
- विश्व हाथी दिवस 2024 का थीम है **"Personifying prehistoric beauty, theological relevance, and environmental importance अर्थात् प्रागैतिहासिक सौंदर्य, धार्मिक प्रासंगिकता और पर्यावरणीय महत्त्व को मूर्त रूप देना"।**
- वर्ष 2017 की जनगणना के अनुसार अनुमानित 27,312 हाथियों और 138 पहचाने गए **हाथी गलियारों** के साथ भारत दुनिया की लगभग **60%** एशियाई हाथियों की आबादी का आवास स्थान है।
- हाथियों की **गर्भधारण अवधि** लगभग **22 महीने** होती है, जो किसी भी स्थलीय जीव की तुलना में सबसे लंबी होती है।
- एशियाई हाथियों (भारतीय) को आवास की कमी, मानव-हाथी संघर्ष और अवैध शिकार के कारण **IUCN रेड लिस्ट** में **लुप्तप्राय** के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

नोट :

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने 30 करोड़ रुपए की योजनाओं का शुभारंभ किया

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रक्षा बंधन से पहले **30 करोड़ रुपए** से अधिक की **26 परियोजनाओं** का उद्घाटन किया।

प्रमुख बिंदु:

- **महिलाओं का सशक्तीकरण:** इन योजनाओं में महिलाओं से संबंधित मुद्दों जिनमें विशेष रूप से इनके आर्थिक उत्थान एवं सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में महिलाओं का सशक्तीकरण सरकार के प्रमुख प्रयासों का हिस्सा हैं।
- **बुनियादी ढाँचा और कल्याण परियोजनाएँ:** शुरू की गई योजनाओं में **बुनियादी ढाँचे के विकास** और **कल्याणकारी कार्यक्रमों से संबंधित योजनाएँ** शामिल है, जिनका उद्देश्य राज्य के समग्र विकास में सुधार करना है।
- **बाढ़ से बचाव के उपाय:** योजनाओं के एक भाग के रूप में, मुख्यमंत्री ने **बाढ़** से प्रभावित क्षेत्रों की सुरक्षा के लिये प्रयासों की घोषणा की, **जिसमें आपदाओं के संबंध में तैयारी और पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।**
- **स्थानीय महिलाओं को पहचान:** मुख्यमंत्री ने जनपद में बेहतर कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित भी किया तथा जनपद की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा **पिरूल, ऐपण, सूत** एवं अन्य स्थानीय उत्पादों से **हस्तनिर्मित राखियों** एवं अन्य निर्मित उत्पादों की सराहना की।

नोट :

- **सार्वजनिक अवसंरचना के लिये नए नाम:** घोषणा में चंपावत में निर्माणाधीन स्टेडियम का नाम **स्वर्गीय कैलाश गहतोड़ी** के नाम पर रखने की घोषणा भी शामिल है।
  - इसके अतिरिक्त, ग्राम पंचायत दुधौली के खड़कोड़ी मार्ग का नाम भारतीय सेना के शहीद कमांडो नवीन सिंह बिष्ट के नाम पर रखा जाएगा।

उत्तराखंड ने चार धाम पर्यटकों पर प्रतिबंध हटाया

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड सरकार ने निर्णय लिया कि चार धाम यात्रा पर जाने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या पर कोई सीमा नहीं होगी,** हालाँकि विभिन्न **भूस्खलनों** के कारण तीर्थयात्रियों का मार्ग अवरुद्ध हो गया है।

- **यह यात्रा** प्रति वर्ष **मई में शुरू होकर सितंबर के प्रथम सप्ताह तक चलती है।**

प्रमुख बिंदु:

- राज्य सरकार ने **धामों के लिए प्रतिदिन 12,000 तीर्थयात्रियों की सीमा निर्धारित की है, लेकिन 2018 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त समिति ने केदारनाथ के लिए प्रतिदिन 5,000 तीर्थयात्रियों की सीमा निर्धारित करने की सिफारिश की थी**
- **वर्ष 2023 के निवेशक शिखर सम्मेलन** में राज्य सरकार ने बताया कि **पर्यटन क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 15% का योगदान** देता है।
  - उन्होंने **वर्ष 2030** तक कुल 20,000 करोड़ रुपए का निवेश आकर्षित करने और **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल** के माध्यम से 200 परियोजनाएँ शुरू करने की योजना की भी रूपरेखा प्रस्तुत की।

चार धाम यात्रा

- **यमुनोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी जिला
  - **समर्पित: देवी यमुना को**
  - यमुना नदी भारत में गंगा नदी के बाद दूसरी सबसे पवित्र नदी है।
- **गंगोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी जिला।
  - **समर्पित:** देवी गंगा को।
  - सभी भारतीय नदियों में सबसे पवित्र मानी जाती है।
- **केदारनाथ धाम:**
  - **स्थान:** रुद्रप्रयाग ज़िला
  - **समर्पित:** भगवान शिव
  - मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित
  - भारत में 12 ज्योतिर्लिंगों (भगवान शिव के दिव्य प्रतिनिधित्व) में से एक।
- **बद्रीनाथ धाम:**
  - **स्थान: चमोली ज़िला।**
  - पवित्र बद्रीनारायण मंदिर का घर।
  - **समर्पित:** भगवान विष्णु
  - वैष्णवों के लिए पवित्र तीर्थस्थलों में से एक।

नोट :

सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक लॉन्च करने वाला पहला भारतीय राज्य बन गया है।

मुख्य बिंदु

- **हिमालयी पर्यावरण अध्ययन और संरक्षण** संगठन सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक का निर्माता है।
- सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक के चार स्तंभ हैं: वायु, मृदा, वृक्ष एवं जल।
  - सूत्र:- **GEP सूचकांक = (वायु-GEP सूचकांक + जल-GEP सूचकांक + मृदा-GEP सूचकांक + वन-GEP सूचकांक**
- **महत्व:**
  - यह **हमारे पारिस्थितिकी तंत्र और प्राकृतिक संसाधनों** पर **मानवशास्त्रीय दबाव** के प्रभाव का आकलन करने में सहायता करता है।
  - यह मानवीय क्रियाओं के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय कल्याण के विभिन्न पहलुओं को समाहित करते हुए, किसी राज्य के पारिस्थितिक विकास का आकलन करने के लिये एक सुदृढ़ और **एकीकृत विधि** प्रदान करता है।
- **अनुशंसाएँ:**
  - गतिविधियों को प्रतिबंधित किया जाना चाहिये; विनियमित और बढ़ावा दिया जाना चाहिये।
  - विनियमित गतिविधियों को केवल वहन क्षमता और पर्यावरणीय प्रभाव आकलन के अनुसार ही अनुमति दी जानी चाहिये।

हिमालयी पर्यावरण अध्ययन एवं संरक्षण संगठन

- यह वर्ष 1979 में गठित एक गैर-सरकारी संगठन है।
- इसके उद्देश्य हैं:
  - हिमालयी समुदाय के लिये संसाधन आधारित पारिस्थितिकी एवं आर्थिक विकास।
  - सामाजिक आर्थिक स्वतंत्रता के लिये सामुदायिक संगठन का निर्माण और सशक्तीकरण

सरकारी नौकरियों में आंदोलनकारियों को आरक्षण

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड आंदोलनकारियों और उनके आश्रितों** ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री से मुलाकात की तथा **सरकारी नौकरियों में 10% आरक्षण प्रदान करने वाले विधेयक के पारित** होने पर आभार व्यक्त किया।

प्रमुख बिंदु

- मुख्यमंत्री के अनुसार **राज्य सरकार आंदोलनकारियों के संघर्ष और बलिदान को मान्यता** देती है तथा उनके कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है।
  - सरकार ने **राज्य आंदोलनकारियों की पेंशन बढ़ाने** के साथ ही **उनकी मृत्यु के बाद उनके आश्रितों को पेंशन** देने का भी निर्णय लिया है।

उत्तराखंड आंदोलन

- **उत्तराखंड आंदोलन के परिणामस्वरूप** अविभाजित उत्तर प्रदेश से **अलग उत्तराखंड राज्य का गठन** हुआ।
- उत्तराखंड को राज्य बनाने की मांग पहली बार वर्ष **1938** में **भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस** के एक **विशेष अधिवेशन** में उठाई गई थी।
- **आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा और वर्ष 1994** तक **पृथक राज्य की मांग ने अंततः एक जन आंदोलन का रूप ले लिया, जिसके परिणामस्वरूप 9 नवंबर, 2000 को भारत के 27वें राज्य का गठन हुआ।**

नोट :

उत्तराखंड विधानसभा में अनुपूरक बजट पेश किया गया

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड सरकार** ने राज्य विधानसभा में 5,013 करोड़ रुपए का **अनुपूरक बजट (Supplementary Budget)** प्रस्तुत किया।

मुख्य बिंदु

- **उत्तराखंड कारागार एवं सुधार सेवाएँ विधेयक, 2024** तथा **ज़मींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार अधिनियम, 1950** में संशोधन भी प्रस्तुत किया गया।
  - अनुपूरक बजट में केंद्र पोषित योजनाओं के लिये **1,532 करोड़ रुपए तथा बाह्य सहायता प्राप्त योजनाओं के लिये 273 करोड़ रुपए शामिल थे।**
  - राज्य में **बड़े निर्माण कार्यों** के लिये कुल 749 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।
  - **टिहरी झील विकास** के लिये 50 करोड़ रुपए, **गौ सदन निर्माण** के लिये 32 करोड़ रुपए, नर्सिंग कॉलेजों के लिये 25 करोड़ रुपए तथा डिग्री कॉलेजों के निर्माण के लिये 14 करोड़ रुपए रखे गए हैं।
- उत्तराखंड कारागार एवं सुधार सेवाएँ विधेयक, 2024 का उद्देश्य केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा **कई पुराने अधिनियमों को निरस्त** करने के बाद **राज्य के कारागार कानूनों को अद्यतन** करना है। यह विधेयक **कैदियों के प्रबंधन और पुनर्वास** से संबंधित है।
- राज्य सरकार ने **नगरपालिका क्षेत्रों के विस्तार और संबंधित भूमि विवादों से उत्पन्न मुद्दों के समाधान के लिये ज़मींदारी उन्मूलन** एवं भूमि सुधार अधिनियम में संशोधन का प्रस्ताव किया है।

ज़मींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार अधिनियम, 1950

- यह भारत में **ज़मींदारी प्रथा को समाप्त करने वाला पहला महत्त्वपूर्ण कानून** था।
- इस सुधार का मुख्य लक्ष्य ज़मींदारों, जागीरदारों और इनामदारों जैसे **बिचौलियों को हटाना** था, जो काश्तकारों का शोषण कर रहे थे।
- इस सुधार का उद्देश्य **भूमि का स्वामित्व सीधे भूमिधारकों या कृषकों को हस्तांतरित करके उन्हें मज़बूत बनाना भी था।**

NCGG मसूरी में क्षमता निर्माण कार्यक्रम

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **मसूरी स्थित राष्ट्रीय सुशासन केंद्र (NCGG)** ने **श्रीलंका** के मध्य-कॅरियर **लोक सेवकों** के लिये **5वाँ क्षमता निर्माण कार्यक्रम** शुरू किया।

मुख्य बिंदु

- यह 19 अगस्त, 2024 से 30 अगस्त, 2024 तक आयोजित किया जाने वाला **दो सप्ताह का कार्यक्रम** है और इसमें **श्रीलंका के 39 मध्य-कॅरियर लोक सेवक भाग** ले रहे हैं।
- यह प्रशिक्षण प्रतिभागियों को नागरिकों के लाभ के लिये **सुशासन मॉडल अपनाने और लागू करने के लिये बहुमूल्य अंतर्दृष्टि** प्रदान करता है।
  - यह कार्यक्रम **प्रतिभागियों को सांस्कृतिक बारीकियों और साझा शासन प्रथाओं की व्यापक समझ प्रदान करने के लिये तैयार** किया गया है।
    - कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किये जाएंगे, जिनमें **शासन के बदलते प्रतिमान, डिजिटल इंडिया, सेवा का अधिकार: जीवनयापन में आसानी (ईज़ ऑफ लिविंग), स्वामित्व योजना के तहत भूमि अभिलेख प्रबंधन, आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम, 2030 तक सतत् विकास लक्ष्य प्राप्त करने का दृष्टिकोण, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना आदि शामिल हैं।**

नोट :

राष्ट्रीय सुशासन केंद्र की स्थापना (NCGG)

- राष्ट्रीय सुशासन केंद्र की स्थापना **वर्ष 2014 में की गई थी। इसका कार्य भारत और अन्य देशों के लोक सेवकों को प्रशिक्षित करना है।**
  - पिछले कुछ वर्षों में केंद्र ने **बांग्लादेश, केन्या, तंजानिया, ट्यूनीशिया, सेशेल्स, गाम्बिया, मालदीव, श्रीलंका, अफगानिस्तान, लाओस, वियतनाम, नेपाल, भूटान, म्याँमार, इथियोपिया, इरिट्रिया, सोमालिया, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया, मेडागास्कर, फिजी, मोज़ाम्बिक और कंबोडिया जैसे विभिन्न देशों के अधिकारियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है।**

ओम पर्वत से पहली बार बर्फ लुप्त

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में इतिहास में पहली बार **उत्तराखंड के ओम पर्वत** से बर्फ लुप्त हो गई है, जिससे **पर्यावरणविदों** में गहरी चिंता उत्पन्न हो गई है।

प्रमुख बिंदु

- विशेषज्ञों ने इस अभूतपूर्व घटना के लिये मुख्य रूप से पिछले पाँच वर्षों में ऊपरी **हिमालयी क्षेत्र** में हुई कम वर्ष और छिटपुट बर्फबारी को ज़िम्मेदार ठहराया है
- **वर्षा में उल्लेखनीय गिरावट ने सीधे तौर पर ओम पर्वत पर बर्फ के आवरण को कम करने में योगदान** दिया है। इसके अतिरिक्त वाहनों से होने वाले **प्रदूषण** में वृद्धि तथा **ग्लोबल वार्मिंग** के प्रभावों ने स्थिति को और भी बदतर बना दिया है।
  - इस घटना के प्रभाव से क्षेत्र के **पर्यटन उद्योग** पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है।
- ओम पर्वत से बर्फ का लुप्त होना **जलवायु परिवर्तन** के व्यापक प्रभाव का स्पष्ट संकेत है।
  - हिमालय क्षेत्र, जो अपने नाज़ुक पारिस्थितिकी तंत्र के लिये जाना जाता है, **तापमान और वर्षा पैटर्न में परिवर्तन के लिये विशेष रूप से अतिसंवेदनशील है**
  - वैश्विक तापमान में वृद्धि ने **ग्लेशियर पिघलने और बर्फबारी में कमी** को बढ़ा दिया है, जिससे क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता तथा जल संसाधन प्रभावित हो रहे हैं।
- क्षेत्र में **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के प्रयासों** में वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करना, **वनाग्नि को नियंत्रित करना तथा सतत् पर्यटन पद्धतियों को बढ़ावा देना, जैसे उपाय शामिल होने चाहिये।**
  - **पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों की वहन क्षमता** का आकलन करने तथा **वाहनों की गतिविधियों पर कड़े नियम लागू** करने से हिमालय की प्राकृतिक सुन्दरता और पारिस्थितिक अखंडता को संरक्षित करने में सहायता मिल सकती है।

नोट :

ओम पर्वत

- यह उत्तराखंड के **पिथौरागढ़ जिले की व्यास घाटी** में लगभग 14,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है
- यह अपनी बर्फ से ढकी चोटी के लिये प्रसिद्ध है, **जो स्वाभाविक रूप से हिंदू प्रतीक "ओम" जैसा पैटर्न बनाती है**
- इस अनूठी विशेषता ने इसे **पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के बीच एक लोकप्रिय गंतव्य बना दिया है।**

पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA)

पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) संभावित पर्यावरणीय प्रभावों की भविष्यवाणी और समाधान करने के लिये डेवलपमेंट प्रोजेक्ट प्लानिंग के शुरुआती चरणों में किया गया एक अध्ययन है।

- **वैधानिक स्थिति:** पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (EIA को अनिवार्य बना दिया गया)
- **नोडल मंत्रालय:** पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC)
- **परियोजना वर्गीकरण:** वर्ष 2006 की EIA अधिसूचना में डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स को वर्गीकृत किया गया है:
  - **A-श्रेणी प्रोजेक्ट:** MoEF&CC से पूर्व पर्यावरणीय स्वीकृति (EC) की आवश्यकता
  - **B-श्रेणी प्रोजेक्ट:** राज्य/केंद्रशासित प्रदेश सरकार से पूर्व EC की आवश्यकता।
    - **B1-श्रेणी प्रोजेक्ट** (EIA की आवश्यकता अनिवार्य है)
    - **B2-श्रेणी प्रोजेक्ट** (EIA की आवश्यकता नहीं है)

प्रोजेक्ट्स की 39 श्रेणियाँ हैं, जिनके लिये पर्यावरणीय स्वीकृति (EC) प्रक्रिया की आवश्यकता होती है और ये EIA के अधीन हैं।

EIA अधिसूचना, 2006 के अनुसार EIA प्रक्रिया

चरण	उद्देश्य	द्वारा किया गया
स्क्रीनिंग स्कोपिंग सार्वजनिक परामर्श प्रोजेक्ट्स की समीक्षा निर्णय लेना निगरानी (EC के बाद)	EIA की आवश्यकता EIA के लिये महत्त्वपूर्ण मुद्दों की पहचान करता है प्रभावित लोगों की चिंताओं का समाधान करता है अंतिम EIA रिपोर्ट/पर्यावरण प्रबंधन योजना (EMP) की जाँच पर्यावरणीय स्वीकृति (EC) प्रदान करना सामान्य एवं विशिष्ट शर्तों का अनुपालन	राज्य विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति (SEAC) (श्रेणी-B) EAC के साथ MoEF&CC द्वारा मानक संदर्भ अवधि (ToR) तैयार की गई/श्रेणी-B प्रोजेक्ट्स के लिये SEAC राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (SPCB)/UT प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (UTPCB) श्रेणी A प्रोजेक्ट्स के लिये EAC और श्रेणी B1 प्रोजेक्ट्स के लिये SEAC श्रेणी A: MoEF&CC श्रेणी B: राज्य EIA प्राधिकरण (SEIAA) SPCB / UTPCB और क्षेत्रीय कार्यालय

EC के लिये सरकारी पहल

- **परिवेश (परिवेश इंटरएक्टिव और सदाचारी पर्यावरण सिंगल विंडो हब द्वारा प्रो-एक्टिव रिस्पॉन्सिव फैसिलिटेशन):** EC के लिये सिंगल विंडो सिस्टम
  - **MoEF&CC और राष्ट्रीय सूचना केंद्र (NIC)** द्वारा विकसित।
- **पर्यावरण सूचना प्रणाली (ENVIS):** पर्यावरण क्षेत्र से संबंधित जानकारी एकत्र करना, एकत्रण, भंडारण करना, पुनः प्राप्त करना और प्रसारित करना।
- **पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2020 का मसौदा:** मौजूदा EIA अधिसूचना, 2006 को परिवर्तित करने के लिये MoEF&CC द्वारा प्रकाशित।

Drishti IAS

✦ ✦ ✦ ✦

नोट :